# श्री नवदेवता पूजा

(रचियता- राजेश कासलीवाल, उज्जैन)

स्थापना

श्री अरहंत सिद्ध परमातम, सूरी पाठक साधु महान ।
धर्म जिनेसुर को ही आगम, जिनप्रतिमा जिनधाम सुथान ।
पूज्य यही है तीनलोक में, वीतराग विज्ञान प्रधान ।
अत्रो तिष्ठो निकट रहो, नवदेव सदा मम उर में आन ।

*ॐ ह्रीं श्री अरहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधु जिनागम जिनधर्म जिनचैत्य चैत्यालय समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।*

*ॐ ह्रीं श्री अरहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधु जिनागम जिनधर्म जिनचैत्य चैत्यालय समूह! अत्र तिष्ठ ठः ठः।*

*ॐ ह्रीं श्री अरहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधु जिनागम जिनधर्म जिनचैत्य चैत्यालय समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।*

(छंद लक्ष्मीधरा; नंदीश्वरद्वीप पूजन जयमाला)

नीर निर्मल मोह मल प्रक्षाल को ।
शरण हूँ चरण में रख निज भाल को ।
पंच परमेश जैन बैन धर्म को जजैं ।
पूज प्रतिमा प्रभो चैत्यधाम को भजें ।

*ॐ ह्रीं श्री अरहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधु जिनागम जिनधर्म जिनचैत्य चैत्यालयभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।*

दग्ध क्रुद्ध भाव मैं आप गंधसार हो ।
चरण चंदन अतः ताप परिहार हो ।
पंच परमेश जैन बैन धर्म को जजैं ।
पूज प्रतिमा प्रभो चैत्यधाम को भजें ।

*ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।*

खंड, खंड-भाव को अखंड अक्षत हुए ।
अखंड आराधना अखंड तंदुल लिये ।
पंच परमेश जैन बैन धर्म को जजैं ।
पूज प्रतिमा प्रभो चैत्यधाम को भजें ।

*ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।*

पुष्प-बाण भेद खेद मुक्त तुम हुए प्रभो ।
पुष्प हार भेंट है मेट संकट विभो ।
पंच परमेश जैन बैन धर्म को जजैं ।
पूज प्रतिमा प्रभो चैत्यधाम को भजें ।

*ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।*

आत्म अनुभव सुधा पान से तृप्त हो ।
क्यों क्षुधा भाव हो आपके भक्त को ।
पंच परमेश जैन बैन धर्म को जजैं ।
पूज प्रतिमा प्रभो चैत्यधाम को भजें ।

*ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।*

अज्ञ हूँ विज्ञ हो ज्ञान भानु दिव्य ज्योत ।
प्रज्ञ का प्रतीक दीप अंतरंग को उद्योत ।
पंच परमेश जैन बैन धर्म को जजैं ।
पूज प्रतिमा प्रभो चैत्यधाम को भजें ।

*ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।*

कर्म निष्कर्म कर शर्म को भोगते ।
धर्म ध्यान धूप ले अर्च शुभ योग ते ।
पंच परमेश जैन बैन धर्म को जजैं ।
पूज प्रतिमा प्रभो चैत्यधाम को भजें ।

*ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।*

आत्म श्रद्धान ज्ञान ध्यान का फल अहो ।
ध्रौव्य अनुपम अचल मोक्ष का थल लहो ।
पंच परमेश जैन बैन धर्म को जजैं ।
पूज प्रतिमा प्रभो चैत्यधाम को भजें ।

*ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।*

अनंत गुणधाम है अमोल है अनर्घ्य है ।
आप गुण चाहते हाथ में अर्घ्य ले ।
पंच परमेश जैन बैन धर्म को जजैं ।
पूज प्रतिमा प्रभो चैत्यधाम को भजें ।

*ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।*

## जयमाला

(दोहा)

परमातम साधक मुनि, जिनवाणी जिनधर्म ।
जिन प्रतिमा जिनधाम को, वंदत कटते कर्म ।

(हरिगीत)

तज कर गृहस्थी धर्म-मुनि का, धार निज-साधन किया ।
रे ! नष्ट घाति धर चतुष्टय, अरहंत जिनवर पद लिया ।।
फिर भस्म रज जो शेष थी, तन तज गए लोकांत जो ।
वे सिद्ध है प्रतिबिंब निज को, ध्या उन्हे शोकांत हो ।।
होकर विरागी तज परिग्रह, शुद्ध उपयोगी हुए ।
ध्या आपको ही आप सम, निर्ग्रन्थ गुरु योगी हुए ।।
रे ! रत्नत्रय की अधिकता से, संघपति आचार्य है ।
करूणार्द्र हो उपदेश दीक्षा, दे जिन्हे स्वीकार्य है ।।
रे ! अर्थभूत पदार्थ में, एकाग्र हो निज ध्यावते ।
अथिर हो उवझाय यदि, आगम पढे पढवावते ।।

पदवी रहित मुनिराज नित, निज भाव को ही साधते ।
या साधु साधनभूत तप, जिनदेव को आराधते ।।
रे ! मुक्ति मार्ग प्रकाश करते, जिन कथित गणधर रचित ।
जिनग्रन्थ को निर्ग्रन्थ रचते, आत्म अनुभव रस खचित ।।
निज आतमा का ज्ञान श्रद्धा, रमणता ही धर्म है ।
है मुक्ति यह ही मार्ग भी, इससे कटे सब कर्म है ।।
प्रतिमा अहो जिननाथ की, जिनसारखी अंतर्मुखी ।
जिनराज को लखकर लहें, सम्यक्त्व को होवें सुखी ।।
रे ! समवसरण के मध्य में, जैसे विराजे देव जिन ।
जिनधाम कृत्याकृत्रिम में भी, राजते हैं रागबिन ।।
नवदेवता ही पूज्य है, नवदेवता आराध्य है ।
जिन अर्चना से बोध निज का, साधना का साध्य है ।।

(दोहा)

जिन जिनागम धर्म जिन, जिनप्रतिमा जिनधाम ।
नितप्रति पूजन वंदना, नितप्रति करें प्रणाम ।।

*ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्ताय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।*